P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817

Remarking
Vol-II * Issue-VI* November - 2015

मौखिक परीक्षा के प्रति छात्रों एवं अध्यापकों के अभिमत

हेमलता दादाणी
व्याख्याता,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
इंजीनियर्स प्वाइन्ट,
खैरथल, अलवर, राजस्थान

सारांश

शिक्षा का वर्तमान महत्व सभी जगह दृष्टिगोचर होता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझने की शक्ति समधुर शब्दा, उसके द्वारा व्यक्त अमौखिक शब्दों द्वारा प्रदर्शित होती है शिक्षण एक प्राचीनतम व्यवसाय है और परीक्षण शिक्षण का आवश्यक अंग तथा मौखिक अन्तःक्रियाये शिक्षण का वृहत्त अंग हैं इसलिए छात्र का मूल्याकंन भी मौखिक होना चाहिए मूल्याकंन को एक आवश्यक एवं प्रभावी विधा के रूप में मौखिक परीक्षा को नकारा नही जा सकता। किसी भी छात्र की अभिव्यक्ति, शब्द प्रवाह, मस्तिष्क की एकाग्र चित्तता किसी भी परिस्थिति के वर्णन करने का कौशल एव किसी भी तथ्य की सम्प्रेषण की क्षमता की जाँच मौखिक परीक्षा द्वारा ही संभव है। क्या मौखिक परीक्षा छात्रों की अभिव्यक्ति क्षमता एवं उपलब्धि को प्रभावित करती है? क्या मौखिक परीक्षा में अच्छे अंक की प्राप्ति हेतु छात्रों द्वारा अध्यापको से अध्ययन निकट सम्पर्क आवश्यक है? इन्ही समस्याओं को जानने का प्रयास इसके द्वारा किया जाना है।

मुख्य शब्द : मौखिक परीक्षा, छात्र, अध्यापक, अभिमत।

प्रस्तावना

शिक्षा वह आवश्यक कला या क्रिया है जो व्यक्ति को पाश्विक गुणा से मुक्त कर दिव्य गुणा के समावेश में सहायक होती है। व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके द्वारा दुसरा को समझने की शक्ति सुमधुर शब्दों द्वारा व्यक्त मौखिक एवं अमौखिक शब्दों प्रदर्शित होता है। अपने विचारो को व्यक्त करने को ही हम अभिव्यक्ति मानते है, प्राचीन भारत में मापन प्रक्रिया का आधार मौखिक प्रणाली पर आधारित था। मौखिक परीक्षा की प्रणाली भारतीय विद्वानों की ही देन है वेदो, उपनिषदो, पुराणो, ग्रन्थो, रामायण, महाभारत आदि धार्मिक ग्रन्थों में मौखिक परीक्षा के उल्लेख जगह–जगह मिलते है। उन्ही परिक्षाओं के तराजू पर भारत के भावी भविष्य की शैक्षिक उपलब्धि को तौला जा रहा है। छात्र के ज्ञानात्मक भावात्मक और क्रियात्मक पक्षो का सही मूल्यांकन करने हेतु विभिन्न शिक्षा आयोगो ने मौखिक परीक्षा के प्रति अपनी अनुशंसाये व्यक्त की है। उन अनुशंसायो के फलस्वरूप विभिन्न विश्व विद्यालयो एवं शिक्षा बोर्डो ने मौखिक परिक्षाओं को समय–समय पर उचित प्रतिनिधित्व देकर विद्यालयो में लागू किया है, नवीन शिक्षा प्रणाली की विधा अर्थात् मौखिक परीक्षा के प्रति छात्रों एव अध्यापको का क्या अभिमत है? अगर नकारात्मक दृष्टिकोण है' तो किन प्रयासो के द्वारा उसे सकारात्मक बनाया जा सकता है। इसे जानना अनिवार्य है। मौखिक परीक्षा के प्रति और वर्तमान परीक्षा सुधार कार्यक्रम में सुधार सम्बन्धि कार्यक्रम हेतु NCERT और I.A.C.S.E जैसी संस्थाये कार्य कर रही है।

मौखिक परीक्षा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

प्राचीन काल में चीन में सिविल सेवाओं के लिये मौखिक परिक्षाये होती थी। सुकरात ने भी इस प्रणाली पर विशेष जोर दिया विद्यालय परोक्षण बुलेटिन ने प्रायोगिक परिक्षाओं में मोखिक परिक्षाओं की विभिन्न कुशलताआ वर्णन किया की है विश्वसनीय, संतोषप्रद, लचीली और समय की बचत व प्रशासन में सुगम है।

20 वी सदी के द्वितीय दशक में लिखित परीक्षाये अधिक लोकप्रिय हो गयी और विश्व के कई देशो ने लिखित परीक्षा को मापन विधि के रूप में अपना लिया किन्तु शीघ्र ही लिखित परीक्षा भी आलोचना का शिकार हो गयी। आये दिन समाचार पत्रा में परीक्षा केन्द्रो पर होने वालो विभत्स कृत्यों के समाचार पढ़ने को मिलते है। ऐसे में पुनः मौखिक परिक्षाओं की आवश्यकता परीक्षा महसूस होने लगी। डा. ब्लूम ने (Evaluation In Secondary School 1985 P.No. 63) परीक्षा प्रणाली पर तीखे प्रहार किये उन्होने बताया की लिखित परीक्षा केवल रटने में विश्वास करती है। विषय–वस्तु को समझने में नहीं। लिखित परीक्षा के द्वारा छात्र सीमित प्रश्ना तक सिमट जाते है।

(N.C.E.R.T us Sep. 1988 Pg No. 162) मौखिक परीक्षा एक मूल्यांकन के विधा के रूप में शिकार किया है, स्पष्ट किया की मौखिक परिक्षा में वस्तुनिष्ठता, एकरूपता और मानवीकरण हो गया है, इसकी वैधता असंदिग्ध है। क्योंकि इसमें विधार्थी मूल्यांकनकर्ता के सामने पूर्ण आत्मविश्वास की भावना से प्रस्तुत होती है। P.N. अरोडा का मानना है कि मौखिक परिक्षाये आधुनिक मूल्यांकन पद्धति में वतमान युग की चुनौतियों का मुकाबला करने में एक नवीन विचार के रूप में सामने आयी है और इसका मानना है कि शिक्षा के लक्ष्या और उद्देश्या को मौखिक परिक्षाआ के द्वारा सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। इससे सम्बन्धित सेमिनारो में भी कई सुझाव दिये जाते है और मौखिक परीक्षा की उपयोगिता आधुनिक परीक्षा प्रणालियों में भी महत्वपूर्ण है। जिसे हम साक्षात्कार के रूप में भी प्रस्तुत कर सकते है।

मौखिक परीक्षा से सम्बन्धित शोध प्रश्न

1. अनुदानित विद्यालयों के छात्रो का क्या अभिमत है ?
2. मौखिक परीक्षा विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता को क्या प्रभावित करती है ?
3. क्या मौखिक परीक्षा में मूल्यांकन पर अध्यापक की मानसिक स्थिती का प्रभाव पड़ता है ?
4. मौखिक परीक्षा में प्रशिक्षण के अभाव में अध्यापक कैसी कठिनायी अनुभव करते है ?
5. क्या मौखिक परीक्षा में अच्छे अंक की प्राप्ति हेतु छात्रो द्वारा निकट सम्पर्क आवश्यक है ?

उद्देश्य

1. अनुदानित विद्यालयो के छात्रा का अभिमत ज्ञान करना।
2. मौखिक परीक्षा के नियोजन फलांकन के प्रति छात्रों का अभिमत ज्ञात करना
3. इस परीक्षा के पति छात्रों की उपलब्धि अभिव्यक्ति क्षमता से सम्बन्धित अभिमत ज्ञात करना।
4. मौखिक परीक्षा के पति अध्यापको के अभिमत ज्ञात करना।

न्यादर्श

इस अध्ययन के लिये अलवर क्षेत्र के अनुदानित विद्यालयो के कक्षा नवम् और कक्षा 11 के विज्ञान विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। अलवर शहर के अनुदानित 7 विद्यालयों के कक्षा नौ (9) के पन्द्रह (15) और कक्षा ग्यारह (11) के पन्द्रह–छात्र प्रत्येक विद्यालय से लिये गये। इस प्रकार 105 कक्षा 9 के और 105 कक्षा 11 के विद्यार्थियो का चयन किया गया और प्रत्येक विद्यालय से 6–6 अध्यापका का चयन किया गया। अध्ययन विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया। विद्यार्थियो के लिये स्वर्निमित मतावली उपकरण तथा अध्यापको के लिये साक्षात्कार अनुसूचि को प्रयोग में लिया गया। छात्रो के लिया (%) प्रतिशत प्रविधि के द्वारा विश्लेषण किया गया।

निष्कर्ष–।

मौखिक परीक्षाआ के प्रति छात्रो के अभिमत से प्राप्त निष्कर्ष–

1. मौखिक परीक्षा द्वारा विचारा को अधिक कुशलता से अभिव्यक्त किया जा सकता है। मौखिक परीक्षा से छात्रो में व्यक्तित्व के गुणा का विकास होता है। इनके उच्चारण में सुधार होता है। आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। उनमें कुशलता का विकास होता है। छात्र अपने शब्द भण्डार में वृद्धि हेतु पत्र–पत्रिकाये पढ़ने शुरू कर दते है, इससे उपलब्धि स्तर में निश्चित वृद्धि होती है। और छात्र में शिष्टाचार के गुणों का विकास भी होता है। अतः मौखिक परोक्षा के सम्बन्ध में छात्र सकारात्मक अभिमत रखते है।

लेकिन छात्रो का एक छोटा समूह यह भी मानता है कि छात्रो में लेखन शैली और अशुद्धियों के प्रति उदासिनता बन जाती है और कई छात्रो के मन में अध्यापका के प्रति भय की भावना भी रहती है। साथ ही मौखिक परिक्षा सम्पादित करते समय समान समय भी नहीं दिया जाता उनके साथ पक्षपात होता है। फलांकन के समय भी छात्रा के साथ पक्षपात दिखायी देता है।

छात्रा का मानना है कि फलांकन के समय अध्यापक की मानसिक स्थिती का प्रभाव पड़ता है। मौखिक परीक्षा से पूर्व मानसिक तनाव भय की स्थिती के प्रति भी छात्रों का सकारात्मक विचार है।

निष्कर्ष–।।

मौखिक परीक्षा के प्रति अध्यापक के अभिमत में– समानता पायी जाती है–

गणित, विज्ञान, कम्प्यूटर विषय का मौखिक मूल्यांकन किया जाना चाहिये। इस विषय पर सभी की सहमति व्यक्त हुयी अध्यापको द्वारा मौखिक परोक्षा के प्रशिक्षण के अभाव में निम्न कमिया दर्शायी गयी– उच्च स्तर का प्रश्न पत्र तैयार करना, समय लेखन शैली का असम्भव होना, लेखन शैली और अशुद्धियो का पता न चलना, शर्मिले बालको का आंकलन उचित रूप से नही होना

इन कमियो हेतु अध्यापका के सुझाव भी रखे गये। जिसमें समान समय विभाजन पाठ्यक्रम के विस्तृत क्षेत्र से प्रश्न पूछना, सिफारिशा से दूर रहना शर्मीले व कमजोर बालको को अधिक अवसर देना, प्रश्नों में विविधता अपनाना। इन सुझावों को अपना कर इस परीक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है।

शैक्षिक उपयोगिता

1. अध्यापको में इस परीक्षा के प्रति सकारात्मक विचार होगा।
2. विद्यालयों में इसके सफल संचालन हेतु समय का नियोजन होगा।
3. इस परीक्षा हेतु समय–2 पर अध्यापको को प्रशिक्षण दिया जाने से नवाचारो का समावेश होगा।
4. सम्प्रेषण एंव अभिव्यक्ति प्रभावी होगी
5. कमजोर व संकोची विद्यार्थियो में आत्म विश्वास बढेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तकें–

1. Bloom, B.S. "Evaluation in Secondary School" IACSE.
2. Best, J.W. : "Research in education" New Delhi, Prentice Hall of India Pvt. Ltd.
3. Borg W.R. : Methodology of Educational Research New York : Longmans Green and Company
4. ढौढियाल, एस. एन. एण्ड फाटक ए : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र,'' जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

5. Good, C.V. and Scatts, D.E. "Methods of Research" New York, Mcgraw Hill Book Co.
6. कपिल, डॉ0 एच. के :'' सांख्यिकी के मूल तत्व'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
7. राय, पारसनाथ : ''अनुसंधान परिचय'' आगरा।
8. शर्मा, आर. एः ''शिक्षा अनुसंधान, मेरठ सूर्या पब्लिकेशन्स।